B- III & IV
L- 27
General Geography

सागरीय तापमान

विश्व के महासागर सूर्य से ऊष्मा ग्रहण करके गर्म होते हैं किन्तु तापमान का वितरण क्षैतिज व लम्बवत रूप में बदलता रहता है।

तापमान का क्षैतिज वितरण :-

सूर्य का प्रकाश विषुवत क्षेत्र से ध्रुवों पर जाने पर कम हो जाता है जिससे स्थल व जल दोनों में ध्रुवों की ओर जाने पर तापमान में गिरावट होती है।

अक्षांश –	0°	20°	40°	60°
सतही तापमान –	26°C	22°C	14°C	1°C

इस अक्षांशीय तापान्तर के साथ-साथ स्थानिक कारणों के चलते असमान तापन की स्थिति पैदा होती है जिसमें सागरीय औसत समताप रेखाएं अपने मार्ग से विचलित होती हैं।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

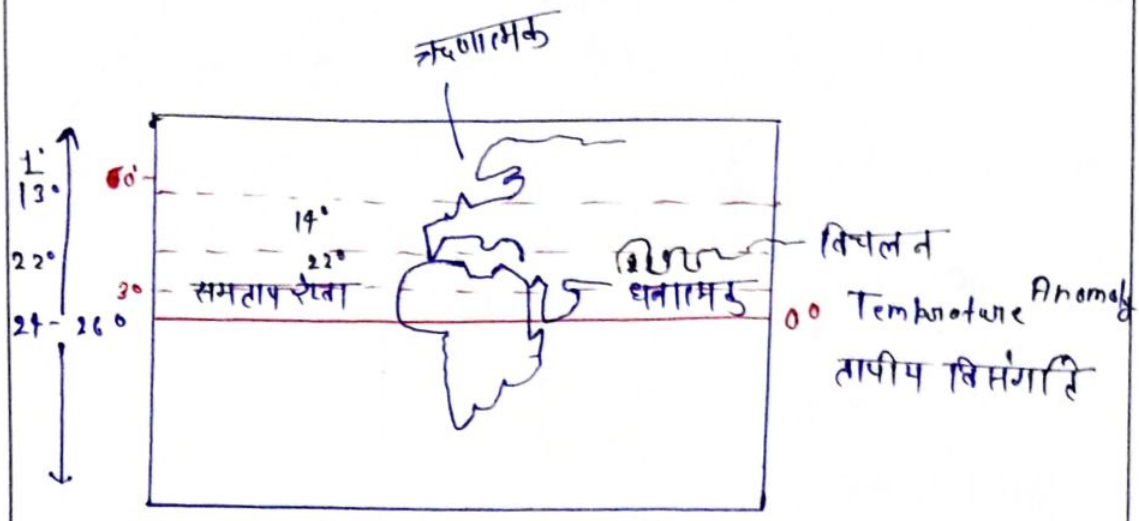

किसी स्थान का तापमान यदि उसके अपेक्षित समतापीय तापमान से भिन्न हो तो उसे तापीय विसंगति माना जाता है।

अपेक्षा से अधिक तापमान को धनात्मक विसंगति और अपेक्षा से कम तापमान को ऋणात्मक विसंगति कहा जाता है।

- उष्ण और उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले बंद सागर या तटवर्ती सागर एवं खाड़ियों में धनात्मक तापीय विसंगति पायी जाती है।
- शीत व शीतोष्ण कटिबंध में स्थलबद्ध एवं भूमि से घिरे हुए सागरों एवं खाड़ियों में ऋणात्मक विसंगति देखी जाती है।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

इस नियम का अपवाद जल धाराओं की उत्पत्ति के कारण हो सकता है।

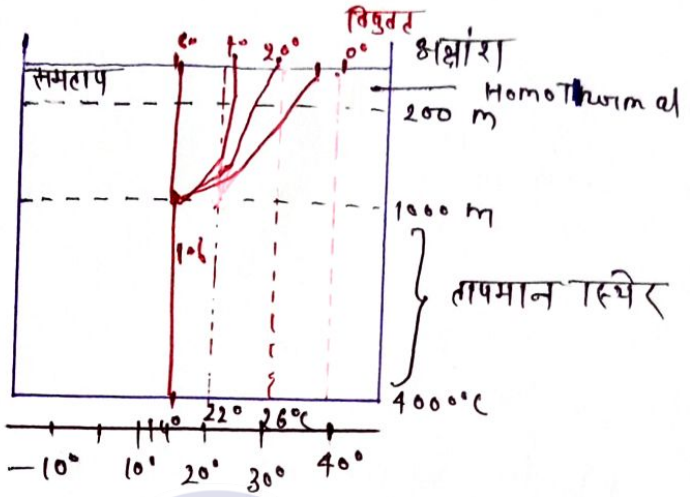

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR